भारत की आर्थिक कमज़ोरी एवं इससे जुड़ा जेंडर एंगल

UPSC प्रासंगिकता

- **GS पेपर 1 (समाज): महिला सशक्तिकरण, सामाजिक बाधाएँ, लैंगिक समानता**
- **GS पेपर 2 (शासन और सामाजिक न्याय): समावेशिता के लिए नीतियाँ, शक्ति और इंदिरा गांधी शहरी गारंटी जैसी योजनाएँ**
- **GS पेपर 3 (अर्थव्यवस्था): टैरिफ का असर, जनसांख्यिकीय लाभांश, श्रम भागीदारी, समावेशी विकास**
- **निबंध पेपर: "महिलाओं को सशक्त बनाना कोई सामाजिक दिखावा नहीं, बल्कि आर्थिक आवश्यकता है।"**

IAS-PCS Institute

समाचार में क्यों?

भारत की अर्थव्यवस्था, जो इस समय **$4.19 ट्रिलियन** की है, अब वैश्विक विकास की मुख्य धारा में शामिल हो गई है। देश **दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था** बनने के लिए तैयार है। हालांकि, इस विकास की रफ्तार अब खतरे में है, क्योंकि अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति **डोनाल्ड ट्रंप** ने भारत के लगभग **$40 बिलियन** के निर्यात पर **50% टैरिफ** लगाने का प्रस्ताव रखा है।

इन टैरिफ से भारत की **GDP** में लगभग **1%** की कमी हो सकती है, खासकर उन उद्योगों पर जो **श्रम-प्रधान** हैं, जैसे:

- वस्त्र उद्योग (Textiles)
- रत्न और आभूषण (Gems)
- चमड़ा (Leather)
- जूते-चप्पल (Footwear)

The gender angle to India's economic vulnerabilities

Premium

The imposition of U.S. tariffs that threatens to impact millions of Indian women in labour-intensive sectors is a wake-up call — women need empowerment as economic agents

Updated - August 27, 2025 01:04 am IST

ANURODH LALIT JAIN

READ LATER PRINT

यह वे क्षेत्र हैं जहाँ महिलाओं की अधिक भागीदारी है। इस विकास ने एक और गहरी समस्या को उजागर किया है, और वह है - भारत की आर्थिक कमज़ोरी जिसका सीधा संबंध **रोजगार में लैंगिक अंतर** से है।

पृष्ठभूमि: भारत की आर्थिक वृद्धि और लैंगिक अंतर

- **महिला श्रमिक बल भागीदारी (FLFPR):** भारत में महिला श्रमिक बल भागीदारी (FLFPR) लगातार कम बनी रही है, जो37% से 41.7% के बीच fluctuates करती है, जबकि वैश्विक औसत लगभग 50% और चीन की 60% है।
- **आर्थिक संभावना:** IMF के अनुमान के अनुसार, इस लैंगिक अंतर को खत्म करने से भारत की GDP में27%तक का इजाफा हो सकता है, जो महिलाओं की भागीदारी की छुपी हुई क्षमता को दर्शाता है।
- **क्षेत्रीय असुरक्षा:** अमेरिका द्वारा लगाये गये 50% टैरिफ से निम्नलिखित क्षेत्र खतरे में हैं — जैसेवस्त्र, रत्न, जूते-चप्पल और चमड़ा — ये सभी श्रम-प्रधान और महिलाओं के अधिक भागीदारी वाले क्षेत्र हैं, जो लाखों महिला श्रमिकों को रोजगार देते हैं। निर्यात में 50% तक की कमी इन उद्योगों को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकती है।

इसलिए, भारत का महिलाओं को पूरी तरह से श्रमिक बल में शामिल नहीं करना अब केवल एक सामाजिक चुनौती नहीं रह गई है, **बल्कि यह एक महत्वपूर्ण आर्थिक बोझ बन गया है**, खासकर जब बाहरी झटके, जैसे टैरिफ, उन क्षेत्रों को निशाना बनाते हैं जहाँ महिलाओं की संख्या अधिक है।

जनसांख्यिकीय लाभ संकट में

भारत वर्तमान में अपने **जनसांख्यिकीय लाभ** के शिखर पर है, जहाँ कार्यकुशल आयु वर्ग की जनसंख्या आश्रितों (बच्चों और वृद्धों) से कहीं अधिक है। यह उच्च उत्पादकता और रोजगार के माध्यम से विकास को तेज़ी से बढ़ाने का एक अद्वितीय अवसर प्रदान करता है।

- **समय-सीमा में अवसर को भुनाना आवश्यक:** यह अनुकूल जनसांख्यिकीय खिड़की केवल **2045** तक ही खुली रहेगी, जिसके बाद वृद्धावस्था जनसंख्या के कारण भारत की श्रमिक शक्ति सिकुड़ने लगेगी — यह प्रवृत्ति पहले ही देशों जैसे **जापान, अमेरिका और चीन** में देखी जा चुकी है, जिन्होंने अपने जनसांख्यिकीय लाभ का पहले ही सही तरीके से लाभ उठाया।
- **लैंगिक कारक:** भारत के लिए इस **आर्थिक लाभ को प्राप्त करना महिला श्रमिक बल भागीदारी दर (FLFPR)**की कम दर के कारण सीमित है। यदि महिलाओं को अर्थव्यवस्था में उत्पादक रूप से शामिल नहीं किया जाता है, तो इस जनसांख्यिकीय लाभ से होने वाली संभावित वृद्धि को कभी हासिल नहीं किया जा सकेगा।
- **वैश्विक पाठ: दक्षिणी यूरोप की अर्थव्यवस्थाओं** जैसे **इटली और ग्रीस** के अनुभव यह दर्शाते हैं कि **कम FLFPR**वृद्धि की संभावनाओं को कमजोर कर सकता है, जिससे कौशलयुक्त श्रमिक बल होने के बावजूद विकास ठप हो सकता है और वित्तीय दबाव बढ़ सकता है। यदि सुधारात्मक कदम नहीं उठाए गए, तो भारत इस दिशा में वही गलती कर सकता है।

महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी के लिए संरचनात्मक बाधाएँ

भारत की मजबूत आर्थिक वृद्धि के बावजूद, महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी गहरी संरचनात्मक बाधाओं द्वारा सीमित है:

- **सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंड:** पारंपरिक अपेक्षाएँ अक्सर महिलाओं की गतिशीलता और करियर के विकल्पों को सीमित करती हैं, यह विचार मजबूत करती हैं कि उनका **मुख्य भूमिका घरेलू कार्यों में होती है, न कि कार्यबल में।**
- **सुरक्षा और बुनियादी ढांचे की कमी:** सुरक्षित **सार्वजनिक परिवहन, स्वच्छता सुविधाओं, और भरोसेमंद शहरी ढांचे की कमी** महिलाओं को रोजगार की तलाश करने से हतोत्साहित करती है, विशेष रूप से शहरी और उपनगर क्षेत्रों में।
- **अवैतनिक देखभाल कार्य का बोझ:** भारत में महिलाएँ, पुरुषों की तुलना में **9.8 गुना अधिक समय अवैतनिक देखभाल और घरेलू जिम्मेदारियों में खर्च करती हैं।** यह अदृश्य श्रम उनके औपचारिक रोजगार के लिए उपलब्धता को महत्वपूर्ण रूप से कम कर देता है।

- **निम्न गुणवत्ता वाली रोजगार:** बड़ी संख्या में **ग्रामीण महिलाएँ अवैतनिक पारिवारिक श्रम, जीवनयापन के लिए कृषि कार्य, या निम्न उत्पादकता वाले अनौपचारिक कामों में संलग्न हैं**, जो आर्थिक स्वतंत्रता या करियर में प्रगति का कोई अवसर नहीं प्रदान करते।
- **नीति में निष्क्रियता:** श्रम कानूनों, बाल देखभाल प्रणालियों, और कार्यस्थल लचीलापन में सुधार धीमा रहा है।

ये बाधाएँ मिलकर महिलाओं की आर्थिक सक्रियता को रोकती हैं, भारत की विकास क्षमता को कमजोर करती हैं और बाहरी झटकों (जैसे टैरिफ व्यवधान) के समय कमजोरियों को बढ़ाती हैं।

भारत के लिए वैश्विक पाठ

- **संयुक्त राज्य अमेरिका (द्वितीय विश्व युद्ध):** द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, **अमेरिका ने महिलाओं को फैक्ट्रियों और सेवाओं में लगाया**, साथ ही समान वेतन प्रावधान और बाल देखभाल सहायता सुनिश्चित की, जिससे महिलाओं की बड़ी संख्या में कार्यबल में भागीदारी सामान्य हो गई।
- **चीन (1978 के बाद सुधार):** राज्य समर्थित बाल देखभाल और शिक्षा के साथ, चीन ने महिलाओं को औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों में सफलतापूर्वक एकीकृत किया, जिससे **महिला श्रमिक बल भागीदारी दर (FLFPR)**लगभग **60%** तक बढ़ी।
- **जापान:** कार्यस्थल सुधारों और परिवार के अनुकूल नीतियों के माध्यम से, जापान ने **FLFPR** को **63% से 70%** तक बढ़ाया, जिसका प्रत्यक्ष योगदान प्रति व्यक्ति GDP वृद्धि में लगभग **4%** था।
- **नीदरलैंड्स:** फ्लेक्सिबल पार्ट-टाइम कार्य के साथ पूरे लाभों को पेश किया, जिससे महिलाओं को घरेलू जिम्मेदारियाँ निभाते हुए औपचारिक अर्थव्यवस्था में प्रभावी रूप से योगदान देने का अवसर मिला।

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि **कानूनी सुरक्षा, देखभाल ढांचा, और लचीले कार्य मॉडल** लैंगिक-समावेशी विकास के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। भारत, जो टैरिफ झटकों और जनसांख्यिकीय दबावों का सामना कर रहा है, इन मॉडलों से प्रेरणा लेकर संदर्भ-विशिष्ट सुधार डिज़ाइन कर सकता है।

@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

भारतीय केस स्टडीज: समावेशन के मार्ग

भारत में कई उदाहरण पहले से मौजूद हैं जो दिखाते हैं कि जब संरचनात्मक बाधाओं को दूर किया जाता है, तो लक्षित हस्तक्षेपों के माध्यम से महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी बढ़ाई जा सकती है:

1. **कर्नाटक की शक्ति योजना**

- यह योजना महिलाओं के लिए **फ्री बस यात्रा** प्रदान करती है, जिससे महिला सवारी में **40%** का इज़ाफा हुआ है।
- यह योजना विशेष रूप से **आधिकारिक और ग्रामीण क्षेत्रों** में महिलाओं को काम, शिक्षा, और उद्यमिता के लिए बेहतर गतिशीलता प्रदान करती है।
- यह योजना पुरुष परिवार के सदस्यों पर निर्भरता को घटाती है, जिससे महिलाओं की **स्वायत्तता** और **श्रम बाजार में भागीदारी** बढ़ती है।

2. गिगइकोनॉमी प्लेटफ़ॉर्म्स

- **Urban Company** जैसे प्लेटफार्मों ने 15,000 से अधिक महिला सेवा प्रदाताओं को जोड़ा है,
- जिनकी औसत आय **Rs. 18,000–Rs. 25,000 प्रति माह** के बीच है।
- इन प्लेटफ़ार्मों पर **बीमा, मातृत्व लाभ, और कौशल विकास कार्यक्रम** प्रदान किए जाते हैं, जिससे यह अधिक सुरक्षित और समावेशी बनते हैं।
- लचीले घंटे और स्थान-आधारित कार्य महिलाएं को कठोर औपचारिक रोजगार संरचनाओं के विकल्प के रूप में उपलब्ध कराते हैं।

3. सार्वजनिक रोजगार गारंटी पहल

- राजस्थान की **इंदिरा गांधी शहरी रोजगार गारंटी** के अंतर्गत **65% लाभार्थी महिलाएँ** हैं।
- इस रोजगार में **स्वच्छता, शहरी हरियाली और देखभाल कार्य** शामिल हैं, जो महिलाओं को सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा नेतृत्व किए गए वेतनभोगी रोजगार में लाते हैं।
- यह योजना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसने कई पहली बार काम करने वाली महिलाओं को उनके घरों के पास आय सृजन के अवसर प्रदान किए हैं।

ये केस स्टडीज यह दर्शाती हैं कि **नीति समर्थन, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स, और सार्वजनिक रोजगार कार्यक्रम** महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा सकते हैं। जब महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों में पूरी तरह से शामिल किया जाता है, तो इसके परिणामस्वरूप **परिवारों की आय में वृद्धि**, **सामाजिक परिणामों में सुधार**, और **GDP विकास में मजबूती** होती है।

आगे का रास्ता: नीति सिफारिशें

भारत को अपनी विकास गति को सुरक्षित रखने और अपने **जनसांख्यिकीय लाभ** का पूरी तरह से लाभ उठाने के लिए **लैंगिक-सम्मिलित आर्थिक नीतियाँ** प्राथमिकता बनानी होंगी। इसके अंतर्गत प्रमुख कदम इस प्रकार हैं:

- **देखभाल संरचना में निवेश करें: बाल देखभाल केंद्रों, वृद्ध देखभाल सुविधाओं**, और **मातृत्व सुरक्षा** के विस्तार के लिए कदम उठाएं, ताकि **अवैतनिक देखभाल कार्य** का बोझ कम हो सके, जो महिलाओं को कार्यबल से बाहर रखता है।
- **यातायात और सुरक्षा: सुरक्षित और विश्वसनीय सार्वजनिक परिवहन** नेटवर्क को मजबूत करें और **कार्यस्थल सुरक्षा** मानदंडों को लागू करें, खासकर शहरी और औद्योगिक क्षेत्रों में।
- **लचीले कार्य मॉडल: पार्ट-टाइम, गिग**, और **रिमोट कार्य** को बढ़ावा दें, साथ ही यह सुनिश्चित करें कि महिलाओं के लिए **सामाजिक सुरक्षा** उपाय उपलब्ध हों, ताकि वे काम और घरेलू जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बना सकें।
- **लक्षित प्रोत्साहन: महिला उद्यमियों** के लिए **कर छूट, सब्सिडी वाले क्रेडिट**, और **स्किलिंग प्लेटफार्म** प्रदान करें। **लैंगिक-केन्द्रित डिजिटल साक्षरता** में निवेश करें, ताकि तकनीकी अंतर को कम किया जा सके।
- **श्रम कानून सुधार: गिग** और **अनौपचारिक क्षेत्र के कार्य** को औपचारिक बनाएं, **समान काम के लिए समान वेतन** सुनिश्चित करें, और **मातृत्व और पितृत्व लाभ** का विस्तार करें ताकि **साझा देखभाल** को बढ़ावा मिल सके।

- **जागरूकता अभियान:** सांस्कृतिक रूढ़ियों को चुनौती देने, महिलाओं के आदर्शों को बढ़ावा देने और सभी क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी को सामान्य बनाने के लिए **राष्ट्रव्यापी अभियान** चलाएं।

  इन सुधारों के माध्यम से, भारत अपनी संरचनात्मक कमजोरियों को अवसरों में बदल सकता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि महिलाओं को विकास की कहानी से बाहर नहीं किया जाएगा, बल्कि वे इसके **मुख्य केंद्र** में होंगी।

निष्कर्ष

विदित है कि आगामी अमेरिकी टैरिफ झटका केवल एक बाहरी व्यापार व्यवधान नहीं है; यह भारत की आंतरिक कमजोरी को उजागर करता है यानी महिलाओं का आर्थिक परिस्थितियों से रोका जाना। महिलाओं को सशक्त बनाना केवल एक कल्याणकारी एजेंडा नहीं, बल्कि **विकास की आवश्यकता** है। यह,यह निर्धारित करेगा कि क्या भारत अपने **जनसांख्यिकीय लाभ** को समृद्धि में बदल सकता है या इसे नष्ट कर देगा। भारत अब एक मोड़ पर खड़ा है जहाँ से:

- **एक रास्ता समावेशी विकास, लचीलापन, और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता की ओर जाता है।**
- **दूसरा रास्ता आर्थिक नाजुकता और खोई हुई अवसरों की ओर ले जाता है।**

भारत को वास्तव में एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरने के लिए, इसका विकास **पुरुषों और महिलाओं दोनों** की कंधों पर निर्भर होना चाहिए।

UPSC मेन्स अभ्यास प्रश्न

Q1. प्रस्तावित अमेरिकी टैरिफ़ भारत के निर्यात पर भारत की अर्थव्यवस्था की लैंगिक कमजोरियों को उजागर करते हैं। व्यापार में झटकों का महिला-प्रधान उद्योगों पर प्रभाव विश्लेषण करें और भारत की वृद्धि को अधिक समावेशी बनाने के लिए संरचनात्मक सुधारों का सुझाव दें।
(15 अंक, 250 शब्द)

Q2. भारत की उच्च आर्थिक वृद्धि के बावजूद, महिलाओं की श्रमबल में भागीदारी दर दुनिया में सबसे कम है। भारत में महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी को सीमित करने वाली सामाजिक-सांस्कृतिक और संरचनात्मक बाधाओं पर चर्चा करें।
(10 अंक, 150 शब्द)